जीवन में नैतिकता अपनायें : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 9 जनवरी 2011

राष्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने अपनी कृति ''आओ हम जीना सीखें'' की अंग्रेजी में अनुदित पुस्तक का विमोचन करते हुए कहा कि आस्तिक विचारधारा के व्यक्ति आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते है एवं कृत कर्मों के फल को स्वीकार कर सारा चिंतन करते है और नास्तिक विचाराधारा के व्यक्ति यह दुनिया इतनी ही है यह सोचकर इन्द्रियों का सुख भोगते हैं, आनन्द और सुख से जीयो यह मानते है, आत्मा को नहीं मानते है। आज व्यक्ति को भौतिक विचारधारा नास्तिक बना रही है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की विचारधारा कैसी भी हो आदमी को गलत कार्यों से बचना चाहिए। जीवन मिला है इसमें कोई भी गलत कार्य ना हो अच्छे कार्य हों। अणुव्रती बनें, जीवन में नैतिकता अपनावें, इससे जीवन में कल्याण होगा।

तेरापंथ के 11वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने बताया कि कभी–कभी व्यक्ति सोचता है अभी मैं मानव हूं, पहले क्या था, मैं कहां से आया, किस दिशा से आया यह ज्ञान नहीं। कई व्यक्तियों को पूर्व जन्म की स्वयं स्मृति हो जाती है ज्ञानी भी बता देते है। यह ज्ञान प्रेक्षाध्यान से हो सकता है। हमें अच्छा जीवन जीने की शैली आनी चाहिए। आदमी चाहे जो कुछ सीख ले, जीवन जीने की कला ना आये तो कमी रह जाती है। वांग्मय में पुरुष की 72 कलाओं का वर्णन है, यदि धर्म की कला नहीं है तो वह उसमें कमी है। हम चाहे जितनी डिग्रीयां हासिल कर लें परन्तु जीवन जीने की कला आदमी को आनी चाहिए। उन्होंने समाज द्वारा चल रही ज्ञानशालाओं को संस्कार निर्माण की अद्भुत शाला बताते हुए आह्वान किया कि छोटे–छोटे बालक–बालिकाओं को अच्छे संस्कार दें, उनकी नींव मजबूत करें। ज्ञान शालाओं के माध्यम से यह हो सकता है। इससे पूर्व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आज नैतिकता का अभाव है, देश के सामने संकट है। अच्छे समाज का निर्माण हो ऐसा प्रयास करें। उम्मीद आदमी का सबसे बड़ा सहारा होता है। पुस्तक विमोचन समारोह के प्रकाशक रणजीत दूगड़ ने ''आओ हम जीना सीखें'' पुस्तक पर प्रकाश डाला। समारोह में सरदारशहर पर लिखित पुस्तक ''आपणो सुरंगो सरदारशहर'' का भी विमोचन किया। कार्यक्रम का संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com

आचार्य श्री महाश्रमण 2014 का दिल्ली में करेंगें चातुर्मास
श्रावक समाज की जोरदार अर्ज

दिल्ली से आए सैंकड़ों श्रावकों ने अग्रसेन भवन से प्रवचन पाण्डाल तक जुलूस के रुप में अगला चौमासा 2014 में दिल्ली में हों, तेरापंथ व धर्म के नारे लगाते हुए आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शन कर अर्ज की। आचार्य महाश्रमण ने दिल्लीवासियों के द्वारा जोरदार अर्ज करने पर 2014 का चातुर्मास दिल्ली में करने की स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने आचार्य तुलसी जन शताब्दी के दो चरणों को वहां मनाने की घोषणा की।

इससे पूर्व पदाभिषेक पर्व पर भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवानी एवं राजनाथ सिंह ने दिल्ली पधारने की अर्ज की थी। उस समय आचार्य प्रवर ने दिल्ली को स्पर्श करने की स्वीकृति प्रदान की थी। आज श्रावक समाज के साथ मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के लिखित निवेदन पर एवं आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी के समर्थन 2014 का चौमासा दिल्ली में करने की घोषणा की।

दिल्ली से आए तेरापंथ सभा के अध्यक्ष के. के. जैन, महिला मंडल की सुमन नाहटा, तेयुप अध्यक्ष अशोक संचेती, वरिष्ठ श्रावक मांगीलाल सेठिया, भीखमचन्द सुराणा, के. सी. जैन, पन्नालाल बैद, पुखराज सेठिया, बाबूलाल दूगड़, कमल सेठिया सहित सैंकड़ो लोगों ने चौमासे के लिए भावपूर्ण निवेदन किया। अणुव्रत महासमिति दिल्ली के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा व दिल्ली अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने 1100 अणुव्रत संकल्प पत्र गुरुदेव को समर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली सभा के मंत्री नरपत जी मालू ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com

समिति, रतनगढ़

आचार्य श्री महाश्रमण
रतनगढ़ जैन परिषद, कोलकाता

आचार्य श्री महाश्रमण
रतनगढ़ जैन परिषद, कोलकाता

LIFE